

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥



कल्याणा

नमो देव्यै जगद्धात्र्यै शिवायै सततं नमः । दुर्गायै भगवत्यै ते कामदायै नमो नमः ॥
नमः शिवायै शान्त्यै ते विद्यायै मोक्षदे नमः । विश्वव्याप्त्यै जगन्मातर्जगद्धात्र्यै नमः शिवे ॥

वर्ष

८३

गोरखपुर, सौर माघ, वि० सं० २०६५, श्रीकृष्ण-सं० ५२३४, जनवरी २००९ ई०

संख्या

१

पूर्ण संख्या ९८६

दिव्य मणिद्वीपमें देवी भुवनेश्वरीकी उपासना

ब्रह्मलोकादूर्ध्वभागे सर्वलोकोऽस्ति यः श्रुतः । मणिद्वीपः स एवास्ति यत्र देवी विराजते ॥×××
सर्वशृङ्गारवेषाढ्या सुकुमाराङ्गवल्लरी । सौन्दर्यधारासर्वस्वा निर्व्याजकरुणामयी ॥
निजसंलापमाधुर्यविनिर्भर्त्सितकच्छपी । कोटिकोटिरवीन्दूनां कान्तिं या बिभ्रती परा ॥
नानासखीभिर्दासीभिस्तथा देवाङ्गनादिभिः । सर्वाभिर्देवताभिस्तु समन्तात्परिवेष्टिता ॥×××
या यास्तु देवतास्तत्र प्रतिब्रह्माण्डवर्तिनाम् ॥
समष्टयः स्थितास्तास्तु सेवन्ते जगदीश्वरीम् । सप्तकोटिमहामन्त्रा मूर्तिमन्त उपासते ॥
महाविद्याश्च सकलाः साम्यावस्थात्मिकां शिवाम् । कारणब्रह्मरूपां तां मायाशबलविग्रहाम् ॥

ब्रह्मलोकसे ऊपरके भागमें जो सर्वलोक सुना गया है, वही मणिद्वीप है; जहाँ भगवती भुवनेश्वरी विराजमान रहती हैं। वे भगवती समस्त शृङ्गारवेषसे सम्पन्न, लताके समान अत्यन्त कोमल अंगोंवाली, समस्त सौन्दर्योकी आधारस्वरूपा तथा निष्कपट करुणासे ओतप्रोत हैं। वे अपनी वाणीकी मधुरतासे वीणाके स्वरोंको भी तुच्छ कर देती हैं। वे परा भगवती करोड़ों-करोड़ों सूर्यों तथा चन्द्रमाओंकी कान्ति धारण करती हैं। वे बहुत-सी सखियों, दासियों, देवांगनाओं तथा समस्त देवताओंसे चारों ओरसे सदा घिरी रहती हैं। प्रत्येक ब्रह्माण्डमें रहनेवाले जो-जो देवता हैं, उनके अनेक समूह वहाँ स्थित रहकर जगदीश्वरीकी उपासना करते हैं। मूर्तिमान् होकर सात करोड़ महामन्त्र तथा समस्त महाविद्याएँ उन साम्यावस्थावाली, कारणब्रह्मस्वरूपिणी तथा मायाशबलविग्रह धारण करनेवाली कल्याणमयी भगवतीकी उपासनामें तत्पर रहते हैं। [श्रीमद्देवीभागवत स्कन्ध १२]



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!



KAPWING

‘कल्याण’ के सम्मान्य सदस्यों और प्रेमी पाठकोंसे नम्र निवेदन

१-‘कल्याण’ के ८३वें वर्ष—सन् २००९ का यह विशेषाङ्क ‘श्रीमदेवीभागवताङ्क’ आपलोगोंकी सेवामें प्रस्तुत है। इसमें ४८० पृष्ठोंमें पाठ्य-सामग्री और ८ पृष्ठोंमें विषय-सूची आदि है। कई बहुरंगे एवं रेखाचित्र भी दिये गये हैं। डाकसे सभी ग्राहकोंको विशेषाङ्क-प्रेषणमें लगभग एक माहका समय लग जाता है।

२-वार्षिक सदस्यता-शुल्क प्रेषित करनेपर भी किसी कारणवश यदि विशेषाङ्क वी०पी०पी० द्वारा आपके पास पहुँच गया हो तो उसे डाकघरसे प्राप्त कर लेना चाहिये एवं प्रेषित की गयी राशिका पूरा विवरण (मनीऑर्डर पावतीसहित) यहाँ भेज देना चाहिये जिससे जाँचकर आपके सुविधानुसार राशिकी उचित व्यवस्था की जा सके। सम्भव हो तो उक्त वी०पी०पी० से किसी अन्य सज्जनको ग्राहक बनाकर उसकी सूचना यहाँ नये सदस्यके पूरे पतेसहित देनी चाहिये। ऐसा करके आप ‘कल्याण’ को आर्थिक हानिसे बचानेके साथ-साथ ‘कल्याण’ के पावन प्रचारमें सहयोगी भी हो सकेंगे।

३-इस अङ्कके लिफाफे (कवर)-पर आपकी सदस्य-संख्या एवं पता छपा है, उसे कृपया जाँच लें तथा अपनी सदस्य-संख्या सावधानीसे नोट कर लें। रजिस्ट्री अथवा वी०पी०पी० का नम्बर भी नोट कर लेना चाहिये। पत्र-व्यवहारमें सदस्य-संख्याका उल्लेख नितान्त आवश्यक है; क्योंकि इसके बिना आपके पत्रपर हम समयसे कार्यवाही नहीं कर पाते हैं। डाकद्वारा अङ्कोंके सुरक्षित वितरणमें सही पता एवं पिन-कोड आवश्यक है। अतः अपने लिफाफेपर छपा अपना पता जाँच लेना चाहिये।

४-‘कल्याण’ एवं ‘गीताप्रेस-पुस्तक-विभाग’की व्यवस्था अलग-अलग है। अतः पत्र तथा मनीऑर्डर आदि सम्बन्धित विभागको अलग-अलग भेजना चाहिये।

‘कल्याण’ के उपलब्ध पुराने विशेषाङ्क

वर्ष	विशेषाङ्क	मूल्य(रु०)	वर्ष	विशेषाङ्क	मूल्य(रु०)	वर्ष	विशेषाङ्क	मूल्य(रु०)	
९	शक्ति-अङ्क	१२०	३५	सं० योगवासिष्ठ	१००	६६	सं० भविष्यपुराण	११०	
१०	योगाङ्क	१००	३६	सं० शिवपुराण (बड़ा टाइप)	१३०	६७	शिवोपासनाङ्क	८५	
११	सं० पद्मपुराण	१५०	३७	सं० ब्रह्मवैवर्तपुराण	१३०	६९	गो-सेवा-अङ्क	७५	
२१	सं० मार्कण्डेयपुराण	६०	४४-४५	गर्गसंहिता [भगवान् श्रीराधाकृष्णकी दिव्य लीलाओंका वर्णन]	१००	७०	धर्मशास्त्राङ्क	९०	
२१	सं० ब्रह्मपुराण	८०				७१	कूर्मपुराण	८०	
२३	उपनिषद्-अङ्क	१२५				७२	भगवल्लीला-अङ्क	६५	
२४	हिन्दू-संस्कृति-अङ्क	१५०	४४-४५	अग्निपुराण (मूल संस्कृतका हिन्दी अनुवाद)	१३०	७३	वेदकथाङ्क	८०	
२५	सं० स्कन्दपुराण	२००				७४	सं० गरुडपुराण	१००	
२६	भक्त-चरिताङ्क	१४०	४५	नरसिंहपुराण-सानुवाद	६०	७५	आरोग्य-अङ्क (संवर्धित सं०)	१३०	
२७	बालक-अङ्क	११०	४८	श्रीगणेश-अङ्क	९०	७७	भगवत्प्रेम-अङ्क	(११ मासिक अङ्क उपहारस्वरूप)	१००
२८	सं० नारदपुराण	१२०	४९	श्रीहनुमान-अङ्क	९०				
२९	संतवाणी-अङ्क	११०	५१	सं० श्रीवराहपुराण	७५	७९	देवीपुराण[महाभागवत]		
३१	तीर्थाङ्क	१२०	५३	सूर्याङ्क	७०		शक्तिपीठाङ्क	८०	
३४	सं० देवीभागवत (मोटा टाइप)		५६	वामनपुराण	८५	८१	अवतार-कथाङ्क	९०	
		१५०	५९	श्रीमत्स्यमहापुराण	१६५	८२	श्रीमद्देवीभागवताङ्क (पूर्वाङ्क)	१००	

सभी अङ्कोंपर डाक-व्यय अतिरिक्त देय होगा। गीताप्रेस-पुस्तक-बिक्री-विभागसे प्राप्य हैं।

‘श्रीमद्देवीभागवताङ्क’ [उत्तरार्ध]-की विषय-सूची

मङ्गलाचरण

विषय	पृष्ठ-संख्या
१- दिव्य मणिद्वीपमें देवी भुवनेश्वरीकी उपासना ९	
२- श्रीमद्देवीभागवतमाहात्म्य १७	

विषय	पृष्ठ-संख्या
३- श्रीमद्देवीभागवतसुभाषितसुधा १८	
४- श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण (उत्तरार्ध)— सिंहावलोकन (राधेश्याम खेमका) २०	

श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	सप्तम स्कन्ध	
१-	पितामह ब्रह्माकी मानसी सृष्टिका वर्णन, नारदजीका दक्षके पुत्रोंको सन्तानोत्पत्तिसे विरत करना और दक्षका उन्हें शाप देना, दक्षकन्याओंसे देवताओं और दानवोंकी उत्पत्ति ४३	
२-	सूर्यवंशके वर्णनके प्रसंगमें सुकन्याकी कथा ४५	
३-	सुकन्याका च्यवनमुनिके साथ विवाह ४८	
४-	सुकन्याकी पतिसेवा तथा वनमें अश्विनीकुमारोंसे भेंटका वर्णन ५१	
५-	अश्विनीकुमारोंका च्यवनमुनिको नेत्र तथा नवयौवनसे सम्पन्न बनाना ५४	
६-	राजा शर्यातिके यज्ञमें च्यवनमुनिका अश्विनीकुमारोंको सोमरस देना ५७	
७-	क्रुद्ध इन्द्रका विरोध करना; परंतु च्यवनके प्रभावको देखकर शान्त हो जाना, शर्यातिके बादके सूर्यवंशी राजाओंका विवरण ६०	
८-	राजा रेवतकी कथा ६२	
९-	सूर्यवंशी राजाओंके वर्णनके क्रममें राजा ककुत्स्थ, युवनाश्व और मान्धाताकी कथा ६५	
१०-	सूर्यवंशी राजा अरुणद्वारा राजकुमार सत्यव्रतका त्याग, सत्यव्रतका वनमें भगवती जगदम्बाके मन्त्र-जपमें रत होना... ६८	
११-	भगवती जगदम्बाकी कृपासे सत्यव्रतका राज्याभिषेक और राजा अरुणद्वारा उन्हें नीतिशास्त्रकी शिक्षा देना ७१	
१२-	राजा सत्यव्रतको महर्षि वसिष्ठका शाप तथा युवराज हरिश्चन्द्रका राजा बनना ७३	

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१३-	राजर्षि विश्वामित्रका अपने आश्रममें आना और सत्यव्रतद्वारा किये गये उपकारको जानना ७६	
१४-	विश्वामित्रका सत्यव्रत (त्रिशंकु)-को सशरीर स्वर्ग भेजना, वरुणदेवकी आराधनासे राजा हरिश्चन्द्रको पुत्रकी प्राप्ति ७९	
१५-	प्रतिज्ञा पूर्ण न करनेसे वरुणका क्रुद्ध होना और राजा हरिश्चन्द्रको जलोदरग्रस्त होनेका शाप देना ८२	
१६-	राजा हरिश्चन्द्रका शुनःशेपको स्तम्भमें बाँधकर यज्ञ प्रारम्भ करना ८५	
१७-	विश्वामित्रका शुनःशेपको वरुणमन्त्र देना और उसके जपसे वरुणका प्रकट होकर उसे बन्धनमुक्त तथा राजाको रोगमुक्त करना, राजा हरिश्चन्द्रकी प्रशंसासे विश्वामित्रका वसिष्ठपर क्रोधित होना ८८	
१८-	विश्वामित्रका मायाशूकरके द्वारा हरिश्चन्द्रके उद्यानको नष्ट कराना ९१	
१९-	विश्वामित्रकी कपटपूर्ण बातोंमें आकर राजा हरिश्चन्द्रका राज्यदान करना ९३	
२०-	हरिश्चन्द्रका दक्षिणा देनेहेतु स्वयं, रानी और पुत्रको बेचनेके लिये काशी जाना ९६	
२१-	विश्वामित्रका राजा हरिश्चन्द्रसे दक्षिणा माँगना और रानीका अपनेको विक्रयहेतु प्रस्तुत करना ९९	
२२-	राजा हरिश्चन्द्रका रानी और राजकुमारका विक्रय करना और विश्वामित्रको ग्यारह करोड़ स्वर्णमुद्राएँ देना तथा विश्वामित्रका और अधिक धनके लिये आग्रह करना १००	
२३-	विश्वामित्रका राजा हरिश्चन्द्रको चाण्डालके हाथ बेचकर ऋणमुक्त करना १०३	

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
२४-	चाण्डालका राजा हरिश्चन्द्रको श्मशानघाटमें नियुक्त करना	१०५
२५-	सर्पदंशसे रोहितकी मृत्यु, रानीका करुण विलाप, पहरेदारोंका रानीको राक्षसी समझकर चाण्डालको सौंपना और चाण्डालका हरिश्चन्द्रको उसके वधकी आज्ञा देना	१०७
२६-	रानीका चाण्डालवेशधारी राजा हरिश्चन्द्रसे अनुमति लेकर पुत्रके शवको लाना और करुण विलाप करना, राजाका पत्नी और पुत्रको पहचानकर मूर्च्छित होना और विलाप करना	१११
२७-	चिता बनाकर राजाका रोहितको उसपर लिटाना और राजा-रानीका भगवतीका ध्यानकर स्वयं भी पुत्रकी चितामें जल जानेको उद्यत होना, ब्रह्माजीसहित समस्त देवताओंका राजाके पास आना, इन्द्रका अमृत-वर्षा करके रोहितको जीवित करना और राजा-रानीसे स्वर्ग चलनेके लिये आग्रह करना, राजाका सम्पूर्ण अयोध्या-वासियोंके साथ स्वर्ग जानेका निश्चय	११४
२८-	दुर्गम दैत्यकी तपस्या; वर-प्राप्ति तथा अत्याचार, देवताओंका भगवतीकी प्रार्थना करना, भगवतीका शताक्षी और शाकम्भरीरूपमें प्राकट्य, दुर्गमका वध और देवगणोंद्वारा भगवतीकी स्तुति	११६
२९-	व्यासजीका राजा जनमेजयसे भगवतीकी महिमाका वर्णन करना और उनसे उन्हींकी आराधना करनेको कहना, भगवान् शंकर और विष्णुके अभिमानको देखकर गौरी तथा लक्ष्मीका अन्तर्धान होना और शिव तथा विष्णुका शक्तिहीन होना	१२०
३०-	शक्तिपीठोंकी उत्पत्तिकी कथा तथा उनके नाम एवं उनका माहात्म्य	१२२
३१-	तारकासुरसे पीड़ित देवताओंद्वारा भगवतीकी स्तुति तथा भगवतीका हिमालयकी पुत्रीके रूपमें प्रकट होनेका आश्वासन देना	१२६
३२-	देवीगीताके प्रसंगमें भगवतीका हिमालयसे माया तथा अपने स्वरूपका वर्णन	१३०
३३-	भगवतीका अपनी सर्वव्यापकता बताते हुए विराटरूप प्रकट करना, भयभीत देवताओंकी स्तुतिसे प्रसन्न भगवतीका पुनः सौम्यरूप धारण करना	१३२
३४-	भगवतीका हिमालय तथा देवताओंसे परमपदकी प्राप्तिका उपाय बताना	१३५
३५-	भगवतीद्वारा यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा तथा कुण्डलीजागरणकी विधि बताना	१३७
३६-	भगवतीके द्वारा हिमालयको ज्ञानोपदेश—ब्रह्मस्वरूपका वर्णन	१४०
३७-	भगवतीद्वारा अपनी श्रेष्ठ भक्तिका वर्णन	१४२
३८-	भगवतीके द्वारा देवीतीर्थों, व्रतों तथा उत्सवोंका वर्णन	१४४

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
३९-	देवी-पूजनके विविध प्रकारोंका वर्णन	१४६
४०-	देवीकी पूजा-विधि तथा फलश्रुति	१४८
अष्टम स्कन्ध		
१-	प्रजाकी सृष्टिके लिये ब्रह्माजीकी प्रेरणासे मनुका देवीकी आराधना करना तथा देवीका उन्हें वरदान देना	१५०
२-	ब्रह्माजीकी नासिकासे वराहके रूपमें भगवान् श्रीहरिका प्रकट होना और पृथ्वीका उद्धार करना, ब्रह्माजीका उनकी स्तुति करना	१५२
३-	महाराज मनुकी वंश-परम्पराका वर्णन	१५४
४-	महाराज प्रियव्रतका आख्यान तथा समुद्र और द्वीपोंकी उत्पत्तिकी प्रसंग	१५५
५-	भूमण्डलपर स्थित विभिन्न द्वीपों और वर्षोंका संक्षिप्त परिचय	१५६
६-	भूमण्डलके विभिन्न पर्वतोंसे निकलनेवाली विभिन्न नदियोंका वर्णन	१५८
७-	सुमेरुपर्वतका वर्णन तथा गंगावतरणका आख्यान	१५९
८-	इलावृतवर्षमें भगवान् शंकरद्वारा भगवान् श्रीहरिके संकर्षणरूपकी आराधना तथा भद्राश्ववर्षमें भद्रश्रवाद्वारा हयग्रीवरूपकी उपासना	१६०
९-	हरिवर्षमें प्रह्लादके द्वारा नृसिंहरूपकी आराधना, केतुमाल-वर्षमें श्रीलक्ष्मीजीके द्वारा कामदेवरूपकी तथा रम्यकवर्षमें मनुजीके द्वारा मत्स्यरूपकी स्तुति-उपासना	१६२
१०-	हिरण्यवर्षमें अर्यमाके द्वारा कच्छपरूपकी आराधना, उत्तरकुरुवर्षमें पृथ्वीद्वारा वाराहरूपकी एवं किम्पुरुष-वर्षमें श्रीहनुमान्जीके द्वारा श्रीरामचन्द्ररूपकी स्तुति-उपासना	१६५
११-	जम्बूद्वीपस्थित भारतवर्षमें श्रीनारदजीके द्वारा नारायण-रूपकी स्तुति-उपासना तथा भारतवर्षकी महिमाका कथन	१६७
१२-	प्लक्ष, शात्मलि और कुशद्वीपका वर्णन	१६९
१३-	क्रौंच, शाक और पुष्करद्वीपका वर्णन	१७०
१४-	लोकालोकपर्वतका वर्णन	१७२
१५-	सूर्यकी गतिका वर्णन	१७३
१६-	चन्द्रमा तथा ग्रहोंकी गतिका वर्णन	१७५
१७-	शिशुमारचक्र तथा ध्रुवमण्डलका वर्णन	१७७
१८-	राहुमण्डलका वर्णन	१७८
१९-	अतल, वितल तथा सुतललोकका वर्णन	१७९
२०-	तलातल, महातल, रसातल और पाताल तथा भगवान् अनन्तका वर्णन	१८१
२१-	देवर्षि नारदद्वारा भगवान् अनन्तकी महिमाका गान तथा नरकोंकी नामावली	१८२
२२-	विभिन्न नरकोंका वर्णन	१८४
२३-	नरक प्रदान करनेवाले विभिन्न पापोंका वर्णन	१८८
२४-	देवीकी उपासनाके विविध प्रसंगोंका वर्णन	१८९

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
--------	------	--------------

नवम स्कन्ध

१-	प्रकृतितत्त्वविमर्श; प्रकृतिके अंश, कला एवं कलांशसे उत्पन्न देवियोंका वर्णन.....	१९३
२-	परब्रह्म श्रीकृष्ण और श्रीराधासे प्रकट चिन्मय देवताओं एवं देवियोंका वर्णन.....	१९९
३-	परिपूर्णतम श्रीकृष्ण और चिन्मयी राधासे प्रकट विराटरूप बालकका वर्णन.....	२०३
४-	सरस्वतीकी पूजाका विधान तथा कवच	२०६
५-	याज्ञवल्क्यद्वारा भगवती सरस्वतीकी स्तुति	२१०
६-	लक्ष्मी, सरस्वती तथा गंगाका परस्पर शापवश भारतवर्षमें पधारना	२१२
७-	भगवान् नारायणका गंगा, लक्ष्मी और सरस्वतीसे उनके शापकी अवधि बताना तथा अपने भक्तोंके महत्त्वका वर्णन करना	२१५
८-	कलियुगका वर्णन, परब्रह्म परमात्मा एवं शक्तिस्वरूपा मूलप्रकृतिकी कृपासे त्रिदेवों तथा देवियोंके प्रभावका वर्णन और गोलोकमें राधा-कृष्णका दर्शन	२१८
९-	पृथ्वीकी उत्पत्तिका प्रसंग, ध्यान और पूजनका प्रकार तथा उनकी स्तुति.....	२२३
१०-	पृथ्वीके प्रति शास्त्र-विपरीत व्यवहार करनेपर नरकोंकी प्राप्तिका वर्णन	२२६
११-	गंगाकी उत्पत्ति एवं उनका माहात्म्य	२२७
१२-	गंगाके ध्यान एवं स्तवनका वर्णन, गोलोकमें श्रीराधा-कृष्णके अंशसे गंगाके प्रादुर्भावकी कथा	२३२
१३-	श्रीराधाजीके रोषसे भयभीत गंगाका श्रीकृष्णके चरणकमलोंकी शरण लेना, श्रीकृष्णके प्रति राधाका उपालम्भ, ब्रह्माजीकी स्तुतिसे राधाका प्रसन्न होना तथा गंगाका प्रकट होना	२३६
१४-	गंगाके विष्णुपत्नी होनेका प्रसंग	२४२
१५-	तुलसीके कथा-प्रसंगमें राजा वृषध्वजका चरित्र-वर्णन	२४३
१६-	वेदवतीकी कथा, इसी प्रसंगमें भगवान् श्रीरामके चरित्रके एक अंशका कथन, भगवती सीता तथा द्रौपदीके पूर्वजन्मका वृत्तान्त	२४५
१७-	भगवती तुलसीके प्रादुर्भावका प्रसंग	२४८
१८-	तुलसीकी स्वप्नमें शंखचूड़का दर्शन, ब्रह्माजीका शंखचूड़ तथा तुलसीकी विवाहके लिये आदेश देना	२५१
१९-	तुलसीके साथ शंखचूड़का गान्धर्वविवाह, शंखचूड़से पराजित और निर्वासित देवताओंका ब्रह्मा तथा शंकरजीके साथ वैकुण्ठधाम जाना, श्रीहरिका शंखचूड़के पूर्वजन्मका वृत्तान्त बताना	२५५
२०-	पुष्पदन्तका शंखचूड़के पास जाकर भगवान् शंकरका सन्देश सुनाना, युद्धकी बात सुनकर तुलसीका सन्तप्त होना और शंखचूड़का उसे ज्ञानोपदेश देना.....	२५९
२१-	शंखचूड़ और भगवान् शंकरका विशद वार्तालाप	२६३

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
--------	------	--------------

२२-	कुमार कार्तिकेय और भगवती भद्रकालीसे शंखचूड़का भयंकर युद्ध और आकाशवाणीका पाशुपतास्त्रसे शंखचूड़की अवध्यताका कारण बताना	२६६
२३-	भगवान् शंकर और शंखचूड़का युद्ध, भगवान् श्रीहरिका वृद्ध ब्राह्मणके वेशमें शंखचूड़से कवच माँग लेना तथा शंखचूड़का रूप धारणकर तुलसीसे हास-विलास करना, शंखचूड़का भस्म होना और सुदामागोपके रूपमें गोलोक पहुँचना	२६९
२४-	शंखचूड़रूपधारी श्रीहरिका तुलसीके भवनमें जाना, तुलसीका श्रीहरिको पाषाण होनेका शाप देना, तुलसी-महिमा, शालग्रामके विभिन्न लक्षण एवं माहात्म्यका वर्णन	२७१
२५-	तुलसी-पूजन, ध्यान, नामाष्टक तथा तुलसीस्तवनका वर्णन	२७६
२६-	सावित्रीदेवीकी पूजा-स्तुतिका विधान	२७८
२७-	भगवती सावित्रीकी उपासनासे राजा अश्वपतिको सावित्री नामक कन्याकी प्राप्ति, सत्यवान्के साथ सावित्रीका विवाह, सत्यवान्की मृत्यु, सावित्री और यमराजका संवाद	२८२
२८-	सावित्री-यमराज-संवाद	२८३
२९-	सावित्री-धर्मराजके प्रश्नोत्तर और धर्मराजद्वारा सावित्रीको वरदान	२८४
३०-	दिव्य लोकोंकी प्राप्ति करानेवाले पुण्यकर्मोंका वर्णन	२८७
३१-	सावित्रीका यमाष्टकद्वारा धर्मराजका स्तवन	२९३
३२-	धर्मराजका सावित्रीको अशुभ कर्मोंके फल बताना ...	२९४
३३-	विभिन्न नरककुण्डोंमें जानेवाले पापियों तथा उनके पापोंका वर्णन	२९५
३४-	विभिन्न पापकर्म तथा उनके कारण प्राप्त होनेवाले नरकोंका वर्णन	३०१
३५-	विभिन्न पापकर्मोंसे प्राप्त होनेवाली विभिन्न योनियोंका वर्णन	३०५
३६-	धर्मराजद्वारा सावित्रीसे देवोपासनासे प्राप्त होनेवाले पुण्यफलोंको कहना	३०८
३७-	विभिन्न नरककुण्ड तथा वहाँ दी जानेवाली यातनाका वर्णन	३०९
३८-	धर्मराजका सावित्रीसे भगवतीकी महिमाका वर्णन करना और उसके पतिको जीवनदान देना	३१५
३९-	भगवती लक्ष्मीका प्राकट्य, समस्त देवताओंद्वारा उनका पूजन	३१९
४०-	दुर्वासाके शापसे इन्द्रका श्रीहीन हो जाना	३२१
४१-	ब्रह्माजीका इन्द्र तथा देवताओंको साथ लेकर श्रीहरिके पास जाना, श्रीहरिका उनसे लक्ष्मीके रुष्ट होनेके कारणोंको बताना, समुद्रमन्थन तथा उससे लक्ष्मीजीका प्रादुर्भाव	३२५
४२-	इन्द्रद्वारा भगवती लक्ष्मीका षोडशोपचार पूजन एवं स्तवन	३२८

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
४३-	भगवती स्वाहाका उपाख्यान	३३१
४४-	भगवती स्वधाका उपाख्यान	३३४
४५-	भगवती दक्षिणाका उपाख्यान	३३६
४६-	भगवती षष्ठीकी महिमाके प्रसंगमें राजा प्रियव्रतकी कथा	३४०
४७-	भगवती मंगलचण्डी तथा भगवती मनसाका आख्यान	३४३
४८-	भगवती मनसाका पूजन-विधान, मनसा-पुत्र आस्तीकका जनमेजयके सर्पसत्रमें नागोंकी रक्षा करना, इन्द्रद्वारा मनसादेवीका स्तवन करना	३४६
४९-	आदि गौ सुरभिदेवीका आख्यान	३५२
५०-	भगवती श्रीराधा तथा श्रीदुर्गाके मन्त्र, ध्यान, पूजा-विधान तथा स्तवनका वर्णन	३५४

दशम स्कन्ध

१-	स्वायम्भुव मनुकी उत्पत्ति, उनके द्वारा भगवतीकी आराधना	३५९
२-	देवीद्वारा मनुको वरदान, नारदजीका विन्ध्यपर्वतसे सुमेरुपर्वतकी श्रेष्ठता कहना	३६०
३-	विन्ध्यपर्वतका आकाशतक बढ़कर सूर्यके मार्गको अवरुद्ध कर लेना	३६२
४-	देवताओंका भगवान् शंकरसे विन्ध्यपर्वतकी वृद्धि रोकनेकी प्रार्थना करना और शिवजीका उन्हें भगवान् विष्णुके पास भेजना	३६३
५-	देवताओंका वैकुण्ठलोकमें जाकर भगवान् विष्णुकी स्तुति करना	३६४
६-	भगवान् विष्णुका देवताओंको काशीमें अगस्त्यजीके पास भेजना, देवताओंकी अगस्त्यजीसे प्रार्थना	३६६
७-	अगस्त्यजीकी कृपासे सूर्यका मार्ग खुलना	३६७
८-	स्वारोचिष, उत्तम, तामस और रैवत नामक मनुओंका वर्णन	३६९
९-	चाक्षुष मनुकी कथा, उनके द्वारा देवीकी आराधनाका वर्णन	३७०
१०-	वैवस्वत मनुका भगवतीकी कृपासे मन्वन्तराधिप होना, सार्वणि मनुके पूर्वजन्मकी कथा	३७१
११-	सार्वणि मनुके पूर्वजन्मकी कथाके प्रसंगमें मधु-कैटभकी उत्पत्ति और भगवान् विष्णुद्वारा उनके वधका वर्णन	३७३
१२-	समस्त देवताओंके तेजसे भगवती महिषमर्दिनीका प्राकट्य और उनके द्वारा महिषासुरका वध, शुम्भ-निशुम्भका अत्याचार और देवीद्वारा चण्ड-मुण्डसहित शुम्भ-निशुम्भका वध	३७५
१३-	मनुपुत्रोंकी तपस्या, भगवतीका उन्हें मन्वन्तराधिपति होनेका वरदान देना, दैत्यराज अरुणकी तपस्या और ब्रह्माजीका वरदान, देवताओंद्वारा भगवतीकी स्तुति और भगवतीका भ्रामरीके रूपमें अवतार लेकर अरुणका वध करना ...	३८०

एकादश स्कन्ध

१-	भगवान् नारायणका नारदजीसे देवीको प्रसन्न करनेवाले सदाचारका वर्णन	३८६
२-	शौचाचारका वर्णन	३८९
३-	सदाचार-वर्णन और रुद्राक्ष-धारणका माहात्म्य	३९१

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
४-	रुद्राक्षकी उत्पत्ति तथा उसके विभिन्न स्वरूपोंका वर्णन	३९३
५-	जपमालाका स्वरूप तथा रुद्राक्ष-धारणका विधान	३९५
६-	रुद्राक्षधारणकी महिमाके सन्दर्भमें गुणनिधिका उपाख्यान ..	३९६
७-	विभिन्न प्रकारके रुद्राक्ष और उनके अधिदेवता	३९९
८-	भूतशुद्धि	४०१
९-	भस्म-धारण (शिरोव्रत)	४०२
१०-	भस्म-धारणकी विधि	४०४
११-	भस्मके प्रकार	४०६
१२-	भस्म न धारण करनेपर दोष	४०७
१३-	भस्म तथा त्रिपुण्ड्र-धारणका माहात्म्य	४१०
१४-	भस्मस्नानका महत्त्व	४१२
१५-	भस्म-माहात्म्यके सम्बन्धमें दुर्वासामुनि और कुम्भीपाकस्थ जीवोंका आख्यान, ऊर्ध्वपुण्ड्रका माहात्म्य	४१५
१६-	सन्ध्योपासना तथा उसका माहात्म्य	४२०
१७-	गायत्री-महिमा	४२६
१८-	भगवतीकी पूजा-विधिका वर्णन, अन्नपूर्णादेवीके माहात्म्यमें राजा बृहद्रथका आख्यान	४२८
१९-	मध्याह्नसन्ध्या तथा गायत्रीजपका फल	४३१
२०-	तर्पण तथा सायंसन्ध्याका वर्णन	४३२
२१-	गायत्रीपुस्तचरण और उसका फल	४३४
२२-	बलिवैश्वदेव और प्राणाग्निहोत्रकी विधि	४३७
२३-	कृच्छ्रचान्द्रायण, प्राजापत्य आदि व्रतोंका वर्णन	४३९
२४-	कामना-सिद्धि और उपद्रव-शान्तिके लिये गायत्रीके विविध प्रयोग	४४२

द्वादश स्कन्ध

१-	गायत्रीजपका माहात्म्य तथा गायत्रीके चौबीस वर्णोंके ऋषि, छन्द आदिका वर्णन	४४७
२-	गायत्रीके चौबीस वर्णोंकी शक्तियों, रंगों एवं मुद्राओंका वर्णन	४४८
३-	श्रीगायत्रीका ध्यान और गायत्रीकवचका वर्णन	४४९
४-	गायत्रीहृदय तथा उसका अंगन्यास	४५०
५-	गायत्रीस्तोत्र तथा उसके पाठका फल	४५१
६-	गायत्रीसहस्रनामस्तोत्र तथा उसके पाठका फल	४५२
७-	दीक्षाविधि	४६५
८-	देवताओंका विजययग्व तथा भगवती उमाद्वारा उसका भंजन भगवती उमाका इन्द्रको दर्शन देकर ज्ञानोपदेश देना	४७२
९-	भगवती गायत्रीकी कृपासे गौतमके द्वारा अनेक ब्राह्मण-परिवारोंकी रक्षा, ब्राह्मणोंकी कृतघ्नता और गौतमके द्वारा ब्राह्मणोंको घोर शाप-प्रदान	४७६
१०-	मणिद्वीपका वर्णन	४८०
११-	मणिद्वीपके रत्नमय नौ प्राकारोंका वर्णन	४८४
१२-	भगवती जगदम्बाके मण्डपका वर्णन तथा मणिद्वीपकी महिमा	४८८
१३-	राजा जनमेजयद्वारा अम्बायज्ञ और श्रीमद्देवीभागवत-महापुराणका माहात्म्य	४९२
१४-	श्रीमद्देवीभागवतमहापुराणकी महिमा	४९३

चित्र-सूची

(रंगीन-चित्र)

विषय	पृष्ठ-संख्या	विषय	पृष्ठ-संख्या
१- सच्चिदानन्दमयी देवी..... आवरण-पृष्ठ		५- भगवती शाकम्भरीदेवीद्वारा शाककी वर्षा.....	४
२- मूलप्रकृतिके दक्षिण अंगसे राधाका और वाम अंगसे लक्ष्मीका प्राकट्य.....	१	६- भगवती गायत्रीके प्रातः, मध्याह्न तथा सायं—तीनों सन्ध्या-कालोंका ध्यान-स्वरूप.....	५
३- मकरवाहिनी भगवती श्रीगंगा.....	२	७- श्रीकृष्णसे पंचमुख महादेवका प्राकट्य.....	६
४- इन्द्र आदि देवताओं तथा महर्षि विश्वामित्रद्वारा हरिश्चन्द्रको आशीर्वाद.....	३	८- भगवती भ्रामरीदेवी.....	७
		९- मणिद्वीपाधिष्ठात्री भगवती श्रीभुवनेश्वरी.....	८

(रेखा-चित्र)

१- दक्षद्वारा नारदजीको शाप देना.....	४४	२३- हरिश्चन्द्रसहित शैव्याको देवताओंका दर्शन.....	११४
२- सुकन्याद्वारा महर्षि च्यवनके नेत्रोंका भेदा जाना.....	४७	२४- देवताओंद्वारा अमृतमयी वृष्टि तथा रोहितका जीवित होना.....	११५
३- सुकन्याद्वारा महर्षि च्यवनकी शुश्रूषा.....	५१	२५- भगवतीका देवताओंको फल-मूल प्रदान करना.....	११८
४- अश्विनीकुमारों तथा महर्षि च्यवनका एक-जैसा रूप देखकर सुकन्याका भगवतीसे प्रार्थना करना.....	५५	२६- देवीद्वारा दुर्गमका वध.....	११९
५- राजा शर्याति एवं महर्षि च्यवनका संवाद.....	५९	२७- भगवान् विष्णुद्वारा देवताओंको प्रबोधन.....	१२७
६- महर्षि च्यवनके आह्वानपर यज्ञाग्निसे कृत्याका उत्पन्न होना.....	६०	२८- देवताओंको भगवतीका दर्शन.....	१२८
७- महर्षि च्यवनद्वारा देवराज इन्द्र एवं अश्विनीकुमारोंको सोमरसका पान कराना.....	६२	२९- हिमालय और देवताओंको देवीका दर्शन.....	१२९
८- राजा यौवनाश्वद्वारा अभिमन्त्रित जलका पान करना..	६७	३०- मनुसहित ब्रह्माजीद्वारा भगवान् वराहकी स्तुति.....	१५३
९- यौवनाश्वकी दायीं कुक्षिसे मान्धाताका उत्पन्न होना..	६७	३१- भगवान् शिवद्वारा भगवान् संकर्षणका आराधन.....	१६१
१०- देवराज इन्द्रका मान्धाताको अपनी तर्जनीद्वारा दुग्धपान कराना.....	६८	३२- भद्रश्रवाद्वारा हयमूर्ति भगवान् वासुदेवकी स्तुति.....	१६२
११- अग्निप्रवेशके लिये उद्यत सत्यव्रतको जगदम्बाका दर्शन....	७१	३३- भक्तराज प्रह्लादद्वारा भगवान् नृसिंहकी स्तुति.....	१६३
१२- देवराजद्वारा त्रिशंकुको विमानपर बैठाना.....	८०	३४- लक्ष्मीजीद्वारा कामदेवरूपधारी भगवान् विष्णुका स्तवन.....	१६३
१३- मन्त्रीका शुनःशेपको राजा हरिश्चन्द्रके पास ले जाना.....	८६	३५- मनुद्वारा मत्स्यरूपधारी भगवान्की स्तुति.....	१६४
१४- राजा हरिश्चन्द्रके सन्ध्या-वन्दनके समय मुनि विश्वामित्रका आना.....	९५	३६- अर्यमाद्वारा कच्छपरूपधारी भगवान्की स्तुति.....	१६५
१५- राजा और रानीकी मूर्च्छा.....	९८	३७- पृथ्वीदेवीद्वारा आदिवराहरूप भगवान्की उपासना.....	१६५
१६- शैव्याद्वारा हरिश्चन्द्रसे अपनेको बेचकर दक्षिणा चुकाने- हेतु कहना.....	१००	३८- हनुमान्जीद्वारा भगवान् श्रीरामकी स्तुति.....	१६६
१७- ब्राह्मणका बाल पकड़कर शैव्याको खींचना.....	१०१	३९- नारदजीद्वारा भगवान् आदिपुरुषका स्तवन.....	१६७
१८- ब्राह्मणका शैव्या एवं रोहितको खरीदकर अपने घरको प्रस्थान.....	१०१	४०- नारकीय यातना.....	१८५
१९- हरिश्चन्द्रद्वारा स्वयंको चाण्डालके हाथ बेचकर मुनि विश्वामित्रको दक्षिणा देना.....	१०५	४१- नारकीय यातना.....	१८७
२०- श्मशानमें राजा हरिश्चन्द्र.....	१०६	४२- देवीके जिह्वाग्रसे गौरवर्णा कन्याका प्रकट होना.....	२०१
२१- रानी शैव्याको मारनेहेतु चाण्डालको सौंपा जाना.....	१०९	४३- भगवान् श्रीकृष्णके रोमकूपोंसे असंख्य गोपोंका प्रकट होना.....	२०१
२२- राजा हरिश्चन्द्रका पुत्रको मृत देखकर मूर्च्छित होना.....	११२	४४- राधाजीके रोमकूपोंसे अनेक गोपकन्याओंका प्रकट होना.....	२०२
		४५- श्रीकृष्णके शरीरसे आविर्भूत देवी दुर्गाका उनकी स्तुति करना तथा श्रीकृष्णका उन्हें रत्नमय सिंहासन प्रदान करना.....	२०२
		४६- विराटरूप बालकका भगवान् श्रीकृष्णसे उनके चरण- कमलोंमें अविचल भक्तिका वर माँगना.....	२०४

विषय	पृष्ठ-संख्या
४७- भगवती सरस्वती	२०८
४८- ब्रह्माजीद्वारा भृगुको विश्वजय नामक सरस्वती-कवच बतलाना	२०८
४९- याज्ञवल्क्यद्वारा भगवती सरस्वतीको प्रणाम करना	२१०
५०- लक्ष्मी, सरस्वती और गंगाके परस्पर शापका कारण सुनकर भगवान् श्रीहरिका उनसे समयानुकूल बातें कहना	२१४
५१- राधाका श्रीकृष्णको पतिरूपमें प्राप्त करनेके लिये तप करना और श्रीकृष्णका प्रकट होना	२२२
५२- पृथ्वीदेवी	२२५
५३- ब्रह्मा, शिव एवं मुनियोंद्वारा श्रीकृष्णका स्तवन	२२८
५४- गंगा-भगीरथके सामने गोपवेधारी श्रीकृष्णका प्राकट्य	२२९
५५- श्रीकृष्णजीका गंगाजीको पतिरूपमें प्राप्त होनेका आश्वासन देना	२३०
५६- माँ गंगा	२३२
५७- गोलोकमें भगवान् शंकरका श्रीकृष्ण और राधाको संगीत सुनाना	२३४
५८- गोपोंद्वारा भगवती राधिकाको प्रणाम करना	२३७
५९- ब्रह्मा, शिव एवं श्रीकृष्णद्वारा भगवती श्रीराधिकाकी स्तुति	२४०
६०- शिव तथा अन्य देवताओंका भगवान् विष्णुको प्रणाम करना	२४४
६१- तुलसीका भगवान् नारायणको पतिरूपमें प्राप्त करने-हेतु तप करना	२४९
६२- ब्रह्माजीद्वारा शंखचूड़ एवं तुलसीको विवाहके लिये प्रेरित करना	२५४
६३- शंखचूड़के वधके लिये भगवान् विष्णुद्वारा शिवको त्रिशूल प्रदान करना	२५९
६४- भगवान् शंकर, कार्तिकेय तथा भद्रकालीद्वारा शंखचूड़को आशीर्वाद देना	२६४
६५- तुलसीको भगवान् नारायणका दर्शन	२७२
६६- सावित्रीद्वारा यमराजका अनुगमन	२८२
६७- यमराजद्वारा सावित्रीको उपदेश	२८७
६८- गोपियाँ एवं भगवान् श्रीकृष्ण	३१६
६९- यमराजद्वारा सावित्रीको वरप्रदान	३१८
७०- देवराज इन्द्रका गुरु बृहस्पतिसे दुर्वासाद्वारा प्राप्त शापका वर्णन	३२३
७१- भगवान् विष्णुद्वारा लक्ष्मीजीसे क्षीरसागरके यहाँ जन्म लेनेहेतु कहना	३२७
७२- तपस्यारत स्वाहादेवीको भगवान् श्रीकृष्णका दर्शन ...	३३२
७३- ब्रह्माजीद्वारा स्वाहादेवीको पितरोंके लिये प्रदान करना	३३५

विषय	पृष्ठ-संख्या
७४- यज्ञपुरुषद्वारा भगवती दक्षिणाकी स्तुति	३३९
७५- भगवती षष्ठीद्वारा बालकको जीवितकर प्रियव्रतको प्रदान करना	३४९
७६- भगवान् श्रीकृष्ण, ब्रह्माजी, शिवजी एवं कश्यपऋषिका ऋषि जरत्कारके आश्रममें आना	३४८
७७- श्रीकृष्णद्वारा अपने वामभागसे लीलापूर्वक बछड़ेसहित दुग्धवती सुरभि गौको प्रकट करना	३५२
७८- दुर्गायन्त्र	३५७
७९- मनुद्वारा देवीसे वरयाचना	३६०
८०- विन्ध्यचल तथा देवर्षि नारदका वार्तालाप	३६१
८१- विन्ध्यद्वारा भगवान् सूर्यका मार्ग अवरुद्ध करना	३६२
८२- देवताओंद्वारा महादेवजीका स्तवन	३६३
८३- भगवान् विष्णुका देवताओंको आश्वासन देना	३६५
८४- विन्ध्यद्वारा महर्षि अगस्त्यको साष्टांग प्रणाम करना ..	३६८
८५- चाक्षुष मनुको भगवतीका दर्शन	३७१
८६- राजा सुरथका सुमेधामुनिके आश्रमपर पहुँचना	३७२
८७- सुरथद्वारा महर्षि सुमेधासे प्रश्न	३७२
८८- मधु-कैटभका ब्रह्माजीके वधको उद्यत होना	३७३
८९- भगवान् विष्णुद्वारा मधु-कैटभका वध	३७४
९०- देवताओंद्वारा भगवान् विष्णु एवं शिवजीको महिषासुरके अत्याचार बताना	३७५
९१- भगवतीद्वारा महिषासुरका वध	३७६
९२- देवताओंद्वारा भगवतीका स्तवन	३७७
९३- शुम्भासुरके दूत सुग्रीव एवं देवीका संवाद	३७८
९४- शुम्भका धूम्राक्षको देवीको पकड़कर लानेका आदेश देना	३७८
९५- भगवतीद्वारा हुंकारमात्रसे धूम्राक्षको भस्म करना	३७९
९६- सुरथद्वारा देवीकी पार्थिव मूर्तिका पूजन	३७९
९७- मनुपुत्रोंद्वारा देवीकी स्तुति	३८०
९८- अरुण नामक दैत्यको ब्रह्माजी एवं गायत्रीका दर्शन	३८२
९९- देवीद्वारा अपने हाथसे भ्रमरोंको उत्पन्न करना	३८५
१००- देवर्षिद्वारा भगवान् नारायणसे प्रश्न	३८६
१०१- षट्चक्रमूर्ति	३८८
१०२- पूरक आदि प्राणायाम	४२२
१०३- भगवती जगदम्बाका देवताओंके समक्ष यक्षरूपमें प्रकट होना	४७२
१०४- अग्निद्वारा तृणको जलानेका प्रयास करना	४७३
१०५- वायुदेवद्वारा तृणको उड़ानेका प्रयास करना	४७३
१०६- देवराज इन्द्रको भगवती हैमवती शिवाका दर्शन	४७४
१०७- जगज्जननी भगवतीद्वारा ऋषि गौतमको पूर्णपात्र प्रदान करना	४७७
१०८- ऋषि गौतमद्वारा कृतघ्न ब्राह्मणोंको शाप	४७८



श्रीमद्देवीभागवतमाहात्म्य

श्रुत्वैतत्तु महादेव्याः पुराणं परमाद्भुतम् । कृतकृत्यो भवेन्मर्त्यो देव्याः प्रियतमो हि सः ॥
 मूलप्रकृतिरेवैषा यत्र तु प्रतिपाद्यते । समं तेन पुराणं स्यात्कथमन्यन्नृपोत्तम ॥
 पाठे वेदसमं पुण्यं यस्य स्याज्जनमेजय । पठितव्यं प्रयत्नेन तदेव विबुधोत्तमैः ॥
 नित्यं यः शृणुयाद्भक्त्या देवीभागवतं परम् । न तस्य दुर्लभं किञ्चित्कदाचित्त्वचिदस्ति हि ॥
 अपुत्रो लभते पुत्रान्धनार्थी धनमाप्नुयात् । विद्यार्थी प्राप्नुयाद्विद्यां कीर्तिमण्डितभूतलः ॥
 वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवन्ध्या च याङ्गना । श्रवणादस्य तद्दोषान्निवर्तेत न संशयः ॥
 यद्गोहे पुस्तकं चैतत्पूजितं यदि तिष्ठति । तद्गोहं न त्यजेन्नित्यं रमा चैव सरस्वती ॥
 नेक्षन्ते तत्र वेतालडाकिनीराक्षसादयः । ज्वरितं तु नरं स्पृष्ट्वा पठेदेतत्समाहितः ॥
 मण्डलान्नाशमाप्नोति ज्वरो दाहसमन्वितः । शतावृत्यास्य पठनात्क्षयरोगो विनश्यति ॥
 प्रतिसन्ध्यं पठेद्यस्तु सन्ध्यां कृत्वा समाहितः । एकैकमस्य चाध्यायं स नरो ज्ञानवान्भवेत् ॥
 नवरात्रे पठेन्नित्यं शारदीयेऽतिभक्तितः । तस्याम्बिका तु सन्तुष्टा ददातीच्छाधिकं फलम् ॥
 वैष्णवैश्चैव शैवैश्च रमोमा प्रीयते सदा । सौरैश्च गाणपत्यैश्च स्वेष्टशक्तेश्च तुष्टये ॥
 पठितव्यं प्रयत्नेन नवरात्रचतुष्टये । वैदिकैर्निजगायत्रीप्रीतये नित्यशो मुने ॥
 वेदसारमिदं पुण्यं पुराणं द्विजसत्तमाः । वेदपाठसमं पाठे श्रवणे च तथैव हि ॥

[महर्षि व्यासने राजा जनमेजयसे कहा —] महादेवीका यह परम अद्भुत पुराण सुनकर मनुष्य कृतकृत्य हो जाता

है और वह भगवतीका प्रियतम हो जाता है। हे नृपश्रेष्ठ! जिस देवीभागवतमें साक्षात् मूलप्रकृतिका ही प्रतिपादन किया गया है, उसके समान अन्य कोई पुराण भला कैसे हो सकता है? हे जनमेजय! जिस देवीभागवतपुराणका पाठ करनेसे वेद-पाठके समान पुण्य प्राप्त होता है, उसका पाठ श्रेष्ठ विद्वानोंको प्रयत्नपूर्वक करना चाहिये। [श्रीसूतजी मुनियोंसे बोले—] जो इस श्रेष्ठ श्रीमद्देवीभागवतका नित्य भक्तिपूर्वक श्रवण करता है, उसके लिये कुछ भी कहीं और कभी दुर्लभ नहीं है। इसके श्रवणसे पुत्रहीन व्यक्तिको पुत्र, धन चाहनेवालेको धन और विद्याके अभिलाषीको विद्याकी प्राप्ति हो जाती है, साथ ही सम्पूर्ण पृथ्वीलोकमें वह कीर्तिमान् हो जाता है। जो स्त्री वन्ध्या, काकवन्ध्या अथवा मृतवन्ध्या हो; वह इस पुराणके श्रवणसे उस दोषसे मुक्त हो जाती है; इसमें सन्देह नहीं है। यह पुराण जिस घरमें विधिपूर्वक पूजित होकर स्थित रहता है, उस घरको लक्ष्मी तथा सरस्वती कभी नहीं छोड़तीं और वेताल, डाकिनी तथा राक्षस आदि वहाँ झाँकतेतक नहीं। यदि ज्वरग्रस्त मनुष्यको स्पर्श करके एकाग्रचित्त होकर इस पुराणका पाठ किया जाय तो दाहक ज्वर उसके मण्डलको छोड़कर भाग जाता है। इसकी एक सौ आवृत्तिके पाठसे क्षयरोग समाप्त हो जाता है। जो मनुष्य प्रत्येक सन्ध्याके अवसरपर दत्तचित्त होकर सन्ध्याविधि सम्पन्न करके इस पुराणके एक-एक अध्यायका पाठ करता है, वह ज्ञानवान् हो जाता है। शारदीय नवरात्रमें परम भक्तिसे इस पुराणका नित्य पाठ करना चाहिये। इससे जगदम्बा उस व्यक्तिपर प्रसन्न होकर उसकी अभिलाषासे भी अधिक फल प्रदान करती हैं। वैष्णव, शैव, सौर तथा गाणपत्यजनोंको अपने-अपने इष्टदेवकी शक्तिकी सन्तुष्टिके लिये चैत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ—इन मासोंके चारों नवरात्रोंमें इस पुराणका प्रयत्नपूर्वक पाठ करना चाहिये; इससे रमा, उमा आदि शक्तियाँ उसपर सदा प्रसन्न रहती हैं। हे मुने! इसी प्रकार वैदिकोंको भी अपनी गायत्रीकी प्रसन्नताके लिये इसका नित्य पाठ करना चाहिये। हे श्रेष्ठ मुनियो! यह पुराण परम पवित्र तथा वेदोंका सारस्वरूप है। इसके पढ़ने तथा सुननेसे वेदपाठके समान फल प्राप्त होता है। [श्रीमद्देवीभागवत]

श्रीमद्देवीभागवतसुभाषितसुधा

नासत्यं क्वापि वक्तव्यं नामार्गे गमनं क्वचित्॥

असत्य कभी नहीं बोलना चाहिये और न कभी असत्-मार्गपर ही जाना चाहिये। (७।११।३४)

धर्मे मतिः सदा कार्या दानं दद्याच्च नित्यशः॥

शुष्कवादो न कर्तव्यो दुष्टसङ्गं च वर्जयेत्।

यष्टव्या विविधा यज्ञाः पूजनीया महर्षयः॥

धर्ममें सदा बुद्धि लगाये रखनी चाहिये और प्रतिदिन दान देते रहना चाहिये। नीरस सम्भाषण नहीं करना चाहिये, दुष्टोंकी संगतिका त्याग कर देना चाहिये, विविध यज्ञानुष्ठान करते रहना चाहिये और महर्षियोंकी सदा पूजा करनी चाहिये। (७।११।३८-३९)

दैवं पुरुषकारश्च माननीयाविमौ नृभिः।

उद्यमेन विना कार्यसिद्धिः सञ्जायते कथम्॥

मनुष्योंको भाग्य तथा पुरुषार्थ—इन दोनोंका आदर करना चाहिये; क्योंकि बिना उद्योग किये कार्यसिद्धि कैसे हो सकती है? (७।१४।३६)

दयासमं नास्ति पुण्यं पापं हिंसासमं नहि॥

दयाके समान कोई पुण्य नहीं है और हिंसाके समान कोई पाप नहीं है। (७।१६।३९)

दयया सर्वभूतेषु सन्तुष्टो येन केन च॥

सर्वेन्द्रियोपशान्त्या च तुष्यत्याशु जगत्पतिः।

जो सभी प्राणियोंके प्रति दयाभाव रखता है, जो कुछ भी प्राप्त हो जाय; उसीसे सन्तोष करता है और अपनी इन्द्रियोंको वशमें रखता है, उसके ऊपर जगत्पति भगवान् श्रीविष्णु शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। (७।१६।४१-४२)

अन्नदाता भयत्राता तथा विद्याप्रदश्च यः।

तथा वित्तप्रदश्चैव पञ्चैते पितरः स्मृताः॥

अन्न प्रदान करनेवाला, भयसे बचानेवाला, विद्याका दान करनेवाला, धन प्रदान करनेवाला और जन्म देनेवाला—ये पाँच पिता कहे गये हैं। (७।१७।२७)

प्राप्य तीर्थं महापुण्यमस्नात्वा यस्तु गच्छति।

स भवेदात्महा भूय इति स्वायम्भुवोऽब्रवीत्॥

जो परम पवित्र तीर्थमें पहुँचकर बिना स्नान किये ही लौट जाता है, वह आत्मघाती होता है—ऐसा स्वायम्भुवो

मनुने कहा है। (७।१९।४)

व्यर्थं हि जीवितं तस्य विभवं प्राप्य येन वै॥

नोपार्जितं यशः शुद्धं परलोकसुखप्रदम्।

वैभव प्राप्त करके भी जिसने परलोकमें सुख देनेवाले पवित्र यशका उपार्जन नहीं किया, उसका जीवन व्यर्थ है। (७।१९।२४-२५)

चिन्तया क्षीयते देहो नास्ति चिन्तासमा मृतिः।

चिन्तासे शरीर क्षीण हो जाता है, चिन्ताके समान तो मृत्यु भी नहीं है। (७।१९।४२)

विचारयित्वा यो ब्रूते सोऽभीष्टं लभते नरः।

जो मनुष्य सम्यक् सोच-समझकर बोलता है, वह अभीष्ट फल प्राप्त करता है। (७।२३।१२)

असत्यान्नरके गच्छेत्सद्यः क्रूरे नराधमः॥

असत्य भाषण करनेके कारण अधम मनुष्य शीघ्र ही भयानक नरकमें जाता है। (७।२३।१३)

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।

क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे॥

उस कार्य-कारणरूप परमात्माको देख लेनेपर इस जीवके हृदयकी ग्रन्थिका भेदन हो जाता है अर्थात् अनात्मपदार्थोंमें स्वरूपाध्यास समाप्त हो जाता है, सभी सन्देह दूर हो जाते हैं और सभी कर्म क्षीण हो जाते हैं। (७।३६।११)

न यत्र वैकुण्ठकथासुधापगा

न साधवो भागवतास्तदाश्रयाः।

न यत्र यज्ञेशमखा महोत्सवाः

सुरेशलोकोऽपि न वै स सेव्यताम्॥

जहाँ भगवत्कथाकी अमृतमयी सरिता प्रवाहित नहीं होती, जहाँ उसके उद्गमस्थानस्वरूप भगवद्भक्त साधुजन निवास नहीं करते और जहाँ समारोहपूर्वक भगवान् यज्ञेश्वरकी पूजा-अर्चा नहीं होती, वह चाहे ब्रह्मलोक ही क्यों न हो, उसका सेवन नहीं करना चाहिये। (८।११।२५)

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि।

मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥

जो मनुष्य सो योजन दूरसे भी गंगा, गंगा—इस

श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण (उत्तरार्ध)—सिंहावलोकन

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।

देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥

नरश्रेष्ठ भगवान् श्रीनर, नारायण और भगवती सरस्वती तथा व्यासदेवको नमन करके पुराणकी चर्चा करनी चाहिये।

श्रीमद्देवीभागवतमें वेदोंने भगवती देवीकी स्तुति करते हुए कहा है—

नमो देवि महामाये विश्वोत्पत्तिकरे शिवे ।

निर्गुणे सर्वभूतेशि मातः शङ्करकामदे ॥

त्वं भूमिः सर्वभूतानां प्राणः प्राणवतां तथा ।

धीः श्रीः कान्तिः क्षमा शान्तिः श्रद्धा मेधा धृतिः स्मृतिः ॥

त्वमुद्गीथेऽर्धमात्रासि गायत्रीव्याहृतिस्तथा ।

जया च विजया धात्री लज्जा कीर्तिः स्पृहा दया ॥

(श्रीमद्देवीभा० १।५।५३-५५)

‘देवी! आप महामाया हैं, जगत्की सृष्टि करना आपका स्वभाव है, आप कल्याणमय विग्रह धारण करनेवाली एवं निर्गुणा हैं, अखिल जगत् आपका शासन मानता है तथा भगवान् शंकरके आप मनोरथ पूर्ण किया करती हैं। सम्पूर्ण प्राणियोंको आश्रय देनेके लिये आप पृथ्वीस्वरूपा हैं, प्राणधारियोंके प्राण भी आप ही हैं। धी, श्री, कान्ति, क्षमा, शान्ति, श्रद्धा, मेधा, धृति और स्मृति—ये सभी आपके नाम हैं। ॐकारमें जो अर्धमात्रा है, वह आपका ही निर्विशेष रूप है। गायत्रीमें आप प्रणव हैं। भूः, भुवः आदि व्याहृतियाँ भी आप ही हैं। जया, विजया, धात्री, लज्जा, कीर्ति, स्पृहा और दया—इन नामोंसे आप प्रसिद्ध हैं। माता! हम आपको नमस्कार करते हैं।’

सभी देवी-देवता और दानवोंके लिये ये चिन्मयी पराशक्ति ही आराधना करनेयोग्य हैं। त्रिलोकीमें इन भगवतीसे बढ़कर अन्य कोई नहीं है—यह बात सत्य है, सत्य है। वेद और शास्त्रोंका भी यही सच्चा तात्पर्य—निर्णय है कि निर्गुण तथा सगुणरूपा चिन्मयी पराशक्ति ही पूजनीय हैं।

पिछले वर्ष कल्याणके विशेषांकके रूपमें

श्रीमद्देवीभागवत (पूर्वार्ध) -में छः स्कन्धतककी कथा प्रकाशित की जा चुकी है। इस वर्ष श्रीमद्देवीभागवत (उत्तरार्ध) प्रकाशित हो रहा है, जिसमें सप्तम स्कन्धसे कथा प्रारम्भ हो रही है—

सप्तमः स्कन्धः

व्यासजी राजा जनमेजयको कथा सुना रहे हैं।

सूर्यवंशी तथा चन्द्रवंशी राजाओंके वंशका विस्तृत वर्णन सुननेकी इच्छा व्यक्त करनेपर राजा जनमेजयको व्यासजी सूर्यवंश तथा चन्द्रवंशकी उत्पत्तिसे सम्बन्धित कथाओंका विस्तारपूर्वक वर्णन करते हैं।

सर्वप्रथम भगवान् विष्णुके नाभिकमलसे ब्रह्माजी उत्पन्न हुए; ब्रह्माजीने मरीचि, अंगिरा, अत्रि, वसिष्ठ, पुलह, क्रतु और पुलस्त्य—इन सात मानस पुत्रोंका सृजन किया। ब्रह्माजीकी गोदसे नारदजीका प्राकट्य हुआ, अँगूठेसे दक्षप्रजापति उत्पन्न हुए; इसी प्रकार सनक आदि अन्य मानसपुत्रोंकी भी उत्पत्ति हुई। बायें हाथके अँगूठेसे वीरिणी नामकी एक सुन्दर कन्या उत्पन्न हुई, जो दक्षप्रजापतिकी पत्नी बनी।

दक्षप्रजापतिके द्वारा वीरिणीके गर्भसे पाँच हजार पुत्र उत्पन्न हुए, जिन्हें ब्रह्माजीसे प्रजाकी वृद्धि करनेकी प्रेरणा मिली, परंतु देवर्षि नारदने यह कहकर 'पृथ्वीकी वास्तविक परिमितिका बिना ज्ञान किये प्रजाकी सृष्टिकार्यमें तुमलोग कैसे तत्पर हो गये' उन्हें इस कार्यसे विरत कर दिया। दृढ़निश्चयी दक्षप्रजापतिने प्रजाओंकी सृष्टिके लिये पुनः अन्य पुत्र उत्पन्न किये, परंतु उन्हें भी नारदजीने यही कहकर इस कार्यसे विरत कर दिया। यह सब देखकर दक्षने पुत्रशोकसे अत्यन्त कुपित होकर नारदजीको शाप दिया कि तुमने मेरे पुत्रोंको भ्रष्ट किया है, अतएव इस पापके परिणामस्वरूप तुम्हें भी गर्भमें वास करना होगा और मेरा पुत्र बनना पड़ेगा। इस प्रकार शापके प्रभावसे मुनि नारद भी वीरिणीके गर्भसे उत्पन्न हुए, तदनन्तर दक्षने वीरिणीके गर्भसे साठ कन्याओंको उत्पन्न किया। उनमेंसे

सुकन्या पातिव्रत्यधर्मका पूर्ण पालन करती हुई वृद्ध

कुछ समय पूर्व विश्वामित्रजी अपनी भार्याको जंगलमें छोड़कर तपस्यामें रत थे। उन दिनों उनकी पत्नी अपने पुत्रोंके साथ अत्यधिक संकटमें पड़ गयी थी। तब सत्यव्रतने कई प्रकारसे उनकी रक्षा की। यह बात विश्वामित्रजीकी पत्नीने विश्वामित्रजीको बतायी और कहा कि इनका हमपर बड़ा उपकार है, आपको भी इनका प्रत्युपकार करना चाहिये। तदनन्तर विश्वामित्रजी सत्यव्रत (त्रिशंकु)–से मिले। सत्यव्रतने सशरीर स्वर्ग जानेकी इच्छा व्यक्त की। विश्वामित्रजीने अपने तपके प्रभावसे उन्हें सशरीर स्वर्ग भेज दिया। स्वर्गलोकमें उनका चाण्डालशरीर धुँसकर देवतागण नाराज हुए तथा इन्द्रने उन्हें वापस

सर्वेन्द्रियोपशान्त्या च तुष्यत्याशु जगत्पतिः । (श्रीमद्देवीभा० ७।१६।३९—४२)

सुनःशेषको मुक्त नहीं किया, तब विश्वामित्रजीने शुनःशेषके निकट जाकर उसे वरुणदेवका मन्त्र प्रदान किया तथा वरुणदेवका स्मरण करते हुए मन्त्र-जप करनेका उपदेश दिया। शुनःशेषके इस प्रकार मन्त्र-जप करनेपर वरुणदेव प्रकट हुए, राजाने भी उनसे विनती करते हुए क्षमा-याचना की। वरुणदेवने दयार्द्र होकर शुनःशेषको बन्धनमुक्त कराया और राजाको भी रोगमुक्त कर दिया।

राजा हरिश्चन्द्र अपनी स्त्री तथा पुत्रके साथ आनन्दपूर्वक राज्य करने लगे। कुछ समय बाद महर्षि विश्वामित्र कुछ कारणवश उनसे रुष्ट हो गये। वे कपटपूर्वक एक ब्राह्मणका वेश बनाकर राजासे मिले। राजाने उनसे कहा—मैंने राजसूय यज्ञ किया है, आप जो भी कुछ माँगेंगे, मैं उसे पूरा करूँगा। उस ब्राह्मणके प्रभावमें आकर राजाने अपना सम्पूर्ण राज्य विश्वामित्रको दान कर दिया। बादमें विश्वामित्रजीने इस दानकी सांगता-सिद्धिहेतु ढाई भार स्वर्णकी दक्षिणा देनेके लिये कहा; क्योंकि किसी भी दानकी सांगता-दक्षिणाके बिना वह दान सफल नहीं होता। राजा हरिश्चन्द्र अत्यधिक चिन्ताग्रस्त हो गये, दक्षिणाके लिये विश्वामित्रके क्रूर वचनोंको सुनकर वे अपनी पत्नी तथा पुत्रके साथ काशीपुरी आये। अपने पतिको अत्यधिक चिन्ताग्रस्त देखकर उनकी पत्नीने उनसे कहा—हे महाराज! आप चिन्ता छोड़कर अपने धर्मका पालन कीजिये। अपने सत्य वचनका अनुपालनरूप जो धर्म है, उससे बढ़कर दूसरा कोई अन्य धर्म मनुष्यके लिये नहीं है। जिस व्यक्तिका वचन मिथ्या हो जाय; उसके अग्निहोत्र, वेदाध्ययन, दान आदि सभी कृत्य निष्फल हो जाते हैं।

इसी बीच एक वेदपारंगत विद्वान् ब्राह्मण वहाँ आ गये, रानीने राजासे कहा—ब्राह्मण तीनों वर्णोंका पिता कहा जाता है, पुत्रके द्वारा पितासे धन लिया जा सकता है; अतः इनसे धनके लिये प्रार्थना की जाय। राजाने उत्तर दिया—मैं क्षत्रिय हूँ, इसलिये किसीसे दान लेनेकी इच्छा नहीं कर सकता। याचना करना ब्राह्मणोंका कार्य है, क्षत्रियोंका नहीं। ब्राह्मण चारों वर्णोंका गुरु है और सर्वदा पूजनीय है। इसलिये गुरुसे याचना नहीं करनी चाहिये।

इसपर रानीने कहा—अपने सत्यकी रक्षाके लिये

आप मुझे बेचकर मुनिकी दक्षिणा चुका दें। उसी समय वहाँ एक ब्राह्मण प्रकट हुए, जिन्होंने ग्यारह करोड़ स्वर्ण-मुद्रा देकर रानी तथा राजकुमार रोहितको खरीद लिया, परंतु यह दक्षिणा विश्वामित्रके लिये पूर्ण नहीं थी। राजाने उनकी दक्षिणाको पूर्ण करनेके लिये स्वयंको भी बेचनेका प्रयास किया, उसी समय चाण्डालका रूप धारणकर धर्मदेव वहाँ आ पहुँचे। राजा चाण्डालके हाथों बिकना नहीं चाहते थे, परंतु विश्वामित्रके क्रोधयुक्त क्रूर वचनोंके कारण उन्होंने विश्वामित्रकी आज्ञासे चाण्डालका दासत्व स्वीकार कर लिया। इसके बदलेमें उन्हें दक्षिणाके लिये पूर्ण धनकी प्राप्ति हो गयी।

राजा हरिश्चन्द्रको चाण्डालने श्मशानमें मृत व्यक्तिका वस्त्र तथा कर आदि लेनेका काम सौंप दिया।

एक समयकी बात है, राजकुमार रोहित खेलते हुए कुश उखाड़ने लगा। उसी समय एक सर्पने बालक रोहितको डस लिया। उसकी मृत्यु हो गयी। करुण विलाप करती हुई रानी शैब्या उसके निष्प्राण शरीरको लेकर श्मशान आयी, वहाँ उसने राजा हरिश्चन्द्रको चाण्डालके रूपमें देखा। प्रारम्भमें रानी अपने पतिको पहचान नहीं पायी तथा राजा हरिश्चन्द्र भी अपनी पत्नी और पुत्रको नहीं पहचान सके। रानीने जब विलाप करना प्रारम्भ किया तो कुछ देर बाद राजा अपनी पत्नी और पुत्रको पहचानकर मूर्च्छित हो गये। मूर्च्छा टूटनेपर पति-पत्नी दोनोंने दुःखसे विह्वल होकर यह निश्चय किया कि पुत्रकी चितापर हम दोनों भी अपना शरीर त्याग देंगे। जैसे ही उन्होंने चिता निर्माणकर भगवती जगदम्बाका ध्यान करते हुए चितामें प्रवेश करना चाहा, उसी समय तत्काल पितामह ब्रह्मा, इन्द्रादि सभी देवगण धर्मदेवको आगेकर वहाँ उपस्थित हो गये। देवगणोंने राजा हरिश्चन्द्रकी अत्यधिक प्रशंसा की और कहा कि आप अपनी भार्या और पुत्रको साथमें लेकर स्वर्गके लिये प्रस्थान कीजिये। तत्पश्चात् चिताके मध्यभागमें रोहितपर अपमृत्युका नाश करनेवाली अमृतमयी वृष्टि होने लगी तथा विपुल पुष्पोंकी वर्षा एवं दुन्दुभियोंकी तेज ध्वनि होने लगी, मृतपुत्र रोहित जीवित हो गया।

राजा हरिश्चन्द्रने कहा कि मैं अयोध्यावासियोंको

भगवतीद्वारा हिमालयको देवीगीताका उपदेश—

पराम्बा भगवतीने हिमालयसे माया तथा अपने स्वरूपका तात्त्विक विवेचन किया। तत्पश्चात् देवीने अपनी सर्वव्यापकता बताते हुए हिमालय तथा देवताओंको अपने विराटरूपके दर्शन कराये, जिसे देखकर देवगण भयभीत हो गये, इसपर भगवतीने पुनः अपना सौम्यरूप धारण कर लिया। देवीने हिमालयको अपने मन्त्र ‘ह्रीं’ का उपदेश दिया तथा अष्टांगयोग और कुण्डलिनीजागरणकी विधि बतायी। इसके बाद उन्होंने परब्रह्मके स्वरूप और अपनी भक्तिकी महिमा तथा उसके प्रकारका वर्णन किया; साथ ही उन्होंने अपने तीर्थों, व्रतों और पूजन-विधान का वर्णन करनेके अनन्तर बताया कि यह देवीगीता (अध्याय ३२—४०) अत्यन्त गोपनीय तथा

जम्बूद्वीपमें कुल नौ वर्ष हैं, भारतवर्ष इसीके अन्तर्गत है। अन्य वर्षोंके नाम इस प्रकार हैं—इलावृतवर्ष, भद्राश्ववर्ष, हरिवर्ष, केतुमालवर्ष, रम्यकवर्ष, हिरण्मयवर्ष, उत्तरकुरुवर्ष तथा किम्पुरुषवर्ष। इन सभी वर्षोंमें भगवान् श्रीहरिके विभिन्न रूपोंकी उपासना होती रहती है।

इन्द्रियसुख पानेका विचार रखनेवाले ब्रह्मा, रुद्र, देव तथा दानव आदि मेरी (लक्ष्मीकी) प्राप्तिके लिये कठिन तप करते हैं, किंतु आपके चरणकमलोंकी उपासना करनेवालेके अतिरिक्त अन्य कोई भी मुझे प्राप्त नहीं कर सकता; क्योंकि मेरा हृदय सदा आपमें ही लगा रहता है। इस प्रकार लक्ष्मीजी तथा अन्य प्रजापति आदि प्रमुख अधीश्वर भी कामनासिद्धिके लिये कामदेवरूपधारी श्रीहरिकी

हम सबने कठोर यज्ञ, तप, व्रत, दान आदिके द्वारा जो यह तुच्छ स्वर्ग प्राप्त किया है, इससे क्या लाभ! स्वर्गके निवासियोंकी आयु एक कल्पकी होनेपर भी उन्हें पुनः जन्म लेना पड़ता है, इसकी अपेक्षा भारतभूमिमें अल्प आयुवाला होकर भी जन्म लेना श्रेष्ठ है; क्योंकि यहाँ धीर पुरुष अपने इस मर्त्यशरीरसे किये हुए सम्पूर्ण कर्म भगवान्को अर्पण करके उनका अभयपद प्राप्त कर लेते हैं। भारतवर्षमें मानवयोनि प्राप्त करके भी जो प्राणी आवागमनरूप बन्धनसे छूटनेका प्रयत्न नहीं करते, वे व्याघ्रकी फाँसीसे मुक्त होकर भी फल आदिके लोभसे

जो अपने पिता, विप्र तथा ब्राह्मणसे द्रोह करता है,

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

वह 'कालसूत्र' नामक नरकमें डाला जाता है।

विपत्तिका समय न रहनेपर भी जो अपने वेदविहित मार्गसे हटकर पाखण्डके मार्गका आश्रय लेता है, उसे यमदूत 'असिपत्रवन' नरकमें डाल देते हैं।

जो राजा अथवा राजपुरुष अधर्मका सहारा लेकर प्रजाको दण्डित करता है, वह 'सूकरमुख' नामक नरकमें गिराया जाता है।

जो पुरुष खटमल आदि जीवोंकी हिंसा करता है, वह 'अन्धकृप' नामक नरकमें गिरता है।

जो कुछ भी धन आदि प्राप्त हो, उसे शास्त्रविहित पंचयज्ञोंमें विभक्त किये बिना जो भोजन करता है, वह 'कमिभोजन' नामक नरकमें गिरता है।

जो प्राणी किसीसे चोरी या बलात् रत्न छीन लेता है, उसे 'सन्दंश' नामक नरकमें गिराया जाता है।

जो पुरुष अथवा स्त्री अगम्यके साथ समागम करते हैं, यमदूत उन्हें 'तप्तसूर्मि' नामक नरकमें गिराकर कोड़ेसे पीटते हैं।

जो घोर पापी मनुष्य जिस किसीके साथ व्यभिचार करता है, उसे 'शाल्मलि' नरकमें गिराया जाता है।

जो राजा या राजपुरुष पाखण्डी बनकर धर्मकी मर्यादा तोड़ते हैं, वे 'वैतरणी' नामक नरकमें गिरते हैं।

जो लोग सदाचारके नियमोंसे विमुख तथा शौचाचारसे रहित होकर शूद्राओंके पति बन जाते हैं तथा निर्लज्जापूर्वक पशुवत् आचरण करते हैं, यमराजके दूत उन्हें विष्ठा, मूत्र, कफ, रक्त और मलसे युक्त ‘पयोद’ नामक नरकमें गिराते हैं।

जो द्विजातिगण कुत्ते और गधे आदिको पालते हैं तथा शास्त्रके विपरीत पशुओंका वध करते हैं, उन्हें यमदूत ‘प्राणरोध’ नामक नरकमें गिराकर बाणोंसे वेधते हैं।

जो दम्भी मनुष्य अभिमानपूर्वक यज्ञोंका आयोजनकर उसमें पशुओंकी हिंसा करते हैं, उन्हें 'विशसन' नामक नरकमें गिराया जाता है।

जो मूर्ख द्विज कामसे मोहित होकर सवर्ण भार्याको वीर्यपान कराता है, उसे 'लालाभक्ष' नामक नरकमें गिराया जाता है।

हैं, दुश्मनोंकी सम्पत्ति नष्ट करते हैं, गाँव तथा धनिकोंको लुटते हैं, वे 'सारमेयादन' नामक नरकमें गिरते हैं।

जो दान और धनके आदान-प्रदानमें साक्षी बनकर सदा झूठ बोलते हैं, वे 'अवीचि' नामक भयंकर नरकमें गिरते हैं।

जो ब्राह्मण अथवा अन्य कोई भी प्रमादवश मद्यपान करता है तथा जो क्षत्रिय और वैश्य सोमपान करता है, उसका 'अयःपान' नामक नरकमें पतन होता है।

जो द्विज अपने घर पधारे हुए अतिथियोंको पापपूर्ण दृष्टिसे देखता है, उसे यमराजके सेवक 'पर्यावर्तन' नरकमें गिराते हैं।

श्रीनारायण कहते हैं—पापकर्म करनेवाले मनुष्योंको यातना देनेके लिये ये अनेक प्रकारके नरक हैं। इसी प्रकार और भी सैकड़ों तथा हजारों नरक हैं, उनमेंसे कुछ ही बताये गये हैं। बहुत-से नरकोंका वर्णन नहीं किया गया है। पापी मनुष्य अनेक यातनाओंसे भरे इन नरकोंमें जाते हैं और धर्मपरायणलोग सुखप्रद लोकोंमें जाते हैं।

देवीका पूजन तथा आराधन करनेवाले सदाचारी पुरुषको नरकमें नहीं जाना पड़ता। सुपूजित होनेपर भगवती जगदम्बा संसारसागरसे मनुष्यका उद्धार कर देती हैं।

देवीकी उपासनाके विविध प्रसंग— भगवती जगदम्बाका पूजन प्रत्येक नर-नारीको अवश्य करना चाहिये। उनके पूजनमें प्रत्येक तिथि, प्रत्येक वार, प्रत्येक नक्षत्र, प्रत्येक योग और प्रत्येक करण प्रशस्त है अर्थात् किसी भी क्षण उनका ध्यान-पूजन किया जा सकता है। तृतीया तिथि भगवतीको विशेष प्रिय होनेसे प्रत्येक माहमें उस तिथिको प्रशस्त नैवेद्यसे उनकी महुएके वृक्षमें भावना करके पूजा करनी चाहिये। उनके पूजनसे मनुष्यकी सम्पूर्ण कामनाएँ सिद्ध हो जाती हैं, वह पापरहित निर्मल बुद्धि प्राप्त कर लेता है तथा उसे नरक-सम्बन्धी किंचिन्मात्र भी भय नहीं होता।

नवम स्कन्ध

नवम स्कन्धका प्रारम्भ मूलप्रकृति और उनके विभिन्न अंशोंके वर्णनसे होता है।

क्या है, उनका लक्षण क्या है तथा वे किस प्रकार प्रकट हुईं?’ श्रीनारायण कहते हैं—हे वत्स! देवी प्रकृतिके सम्पूर्ण लक्षण कौन बता सकता है; फिर भी धर्मराजके मुखसे जो मैंने सुना है, उसे यत्किंचित् रूपसे बताता हूँ।

महामायासे युक्त परमेश्वर सृष्टिके निमित्त अर्धनारीश्वर बन गये, जिनका दक्षिणार्ध भाग पुरुष और वामार्ध भाग प्रकृति कहा जाता है। जैसे अग्निमें दाहिका शक्ति अभिन्नरूपसे स्थित है, वैसे ही परमात्मा और प्रकृतिरूपा शक्ति भी अभिन्न है। इसीलिये योगीजन स्त्री और पुरुषका भेद नहीं करते और सभी कुछ ब्रह्म है—ऐसा निरन्तर चिन्तन करते हैं। भगवती मूलप्रकृति सृष्टि करनेकी कामनासे भक्तोंपर अनुग्रह करनेहेतु पाँच रूपोंमें अवतरित हुईं।

गणेशमाता **दुर्गा** शिवप्रिया तथा शिवरूपा हैं, जो पूर्णब्रह्मस्वरूपा हैं। शुद्ध सत्त्वरूपा **महालक्ष्मी** धनधान्यकी अधिष्ठात्री तथा आजीविकास्वरूपिणी हैं, वे वैकुण्ठमें अपने स्वामी विष्णुकी सेवामें तत्पर रहती हैं। वे स्वर्गमें स्वर्गलक्ष्मी, राजाओंमें राज्यलक्ष्मी, गृहस्थ मनुष्योंके घरमें गृहलक्ष्मी और सभी प्राणियों तथा पदार्थोंमें शोभारूपमें विराजमान रहती हैं। **भगवती सरस्वती** परमात्माकी वाणी, बुद्धि, विद्या एवं ज्ञानकी अधिष्ठात्री हैं तथा सभी विद्याओंकी विग्रहरूपा हैं; वे देवी मनुष्योंको बुद्धि, कवित्वशक्ति, मेधा, प्रतिभा और स्मृति प्रदान करती हैं। **भगवती सावित्री** चारों वर्णों, वेदांगों, छन्दों, सन्ध्यावन्दनके मन्त्रों एवं समस्त तन्त्रोंकी जननी हैं। पंचप्राणोंकी अधिष्ठात्री, पंचप्राणस्वरूपा तथा सभी शक्तियोंमें परम सुन्दर **भगवती राधा** परमात्मप्रभु श्रीकृष्णकी रासलीलाकी अधिष्ठात्री हैं। जिन्होंने ब्रजमण्डलमें वृषभानुकी पुत्रीके रूपमें जन्म लिया तथा ब्रह्मादि देवोंके द्वारा भी जो अदृष्ट थीं, वे ही श्रीराधा भारतवर्षमें सर्वसाधारणको दृष्टिगत हुईं।

प्रत्येक भुवनमें सभी देवियाँ तथा नारियाँ इन्हीं प्रकृतिदेवीके अंश, कला तथा कलांशसे उत्पन्न हैं।

भगवतीके पूर्णावताररूपमें प्रधान अंशस्वरूपा देवियोंका वर्णन—लोकपावनी **गंगा** भगवतीकी प्रधान अंशस्वरूपा हैं, वे भगवान् विष्णुके श्रीविग्रहसे प्रकट हुई हैं तथा सनातनरूपसे ब्रह्मद्रव होकर विराजती हैं। विष्णुवल्लभा

तुलसी भी भगवतीकी प्रधान अंशस्वरूपा हैं। वे सती सदा भगवान् विष्णुके चरणपर विराजती हैं और उनकी आभूषणरूपा हैं। कश्यपकी पुत्री **मनसादेवी** भी शक्तिके प्रधान अंशसे प्रकट हुई हैं, वे भगवान् शंकरकी प्रिय शिष्या हैं तथा अत्यन्त ज्ञानविशारद हैं। सभी मन्त्रोंकी अधिष्ठात्री देवी मनसा ब्रह्मतेजसे देदीप्यमान रहती हैं। भगवतीकी प्रधान अंशस्वरूपा जो मातृकाओंमें पूज्यतम देवसेना हैं, वे ही **षष्ठीदेवी**के नामसे कही गयी हैं। वे पुत्र-पौत्र आदि प्रदान करनेवाली तथा तीनों लोकोंकी जननी हैं। वे मूलप्रकृतिकी षष्ठांशस्वरूपा होनेके कारण षष्ठीदेवी कही जाती हैं। जल, स्थल, आकाश और गृहमें भी बालकोंके कल्याणमें ये सदा निरत रहती हैं। **मंगलचण्डिका** देवी भी मूलप्रकृतिकी अंशस्वरूपा हैं। वे प्रकृतिदेवीके मुखसे प्रकट हुई हैं और सभी प्रकारके मंगल प्रदान करनेवाली हैं। उत्पत्तिके समय वे मंगलरूपा तथा संहारके समय कोपरूपिणी हैं। पराशक्तिके प्रधान अंशस्वरूपसे कमललोचना **भगवती काली**का प्राकट्य हुआ है, वे शुम्भ-निशुम्भके साथ युद्धकालमें जगदम्बा दुर्गाके ललाटसे प्रकट हुईं। ये धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष—सबकुछ देनेमें समर्थ हैं। भगवती प्रकृतिके प्रधान अंशस्वरूपसे **भगवती वसुन्धरा** प्रकट हुई हैं। इनके बिना सम्पूर्ण चराचर जगत् निराधार हो जाता है।

तदनन्तर श्रीनारायण प्रकृतिकी कलाओं तथा देवताओंकी भार्याओंका वर्णन करते हैं। स्वाहा अग्निदेवकी भार्या हैं। यज्ञदेवकी पत्नी दीक्षा तथा दक्षिणा हैं। पितृदेवोंकी पत्नी स्वधादेवी हैं। वायुदेवकी पत्नी स्वस्तिदेवी, गणपतिकी पत्नी पुष्टिदेवी, भगवान् अनन्तदेवकी पत्नी तुष्टिदेवी, सत्यदेवकी पत्नी सतीदेवी, मोहकी पत्नी दयादेवी और पुण्यदेवकी पत्नी प्रतिष्ठादेवी हैं। उद्योगदेवकी पत्नी क्रियादेवी हैं, जो सभीके द्वारा पूजित तथा मान्य हैं। अधर्मकी पत्नी मिथ्यादेवी हैं, जिन्हें सभी धूर्तजन पूजते हैं। सत्ययुगमें ये मिथ्यादेवी तिरोहित रहती हैं, त्रेतायुगमें सूक्ष्मरूपसे रहती हैं, द्वापरमें आधे शरीरवाली होकर रहती हैं, किंतु कलियुगमें ये सर्वत्र व्याप्त रहती हैं और अपने भाई कपटके साथ घर-घर घूमती रहती हैं। सुशीलकी दो

पृथ्वीकी उत्पत्तिका प्रसंग—पृथ्वीकी उत्पत्तिके

* आज भी नेपालमें मुक्तिनाथधामके निकट गण्डकीनदीके तटपर शिलारूपमें शालग्राम प्राप्त होते हैं।

Hinduism Discord Server <https://dsc.gg/dharma> | MADE WITH LOVE BY Avinash/Sh

भगवती लक्ष्मीके प्राकट्यकी कथा तथा
दुर्वासाके शापसे इन्द्रका श्रीहीन हो जाना—इसके
अनन्तर भगवती राधाके दाहिने अंशसे लक्ष्मीका प्राकट्य

शिव तथा देवताओंके द्वारा पूजा तथा स्तुति किये जानेपर
देवी लक्ष्मीने देवताओंके भवनपर अपनी कृपादृष्टि डाली।
फलस्वरूप वे देवगण मुनि दुर्वासाके शापसे मुक्त हो
गये तथा सभी अपने-अपने लोकोंको चले गये।

भगवती स्वाहाका उपाख्यान—नारदजी कहते हैं—सभी धार्मिक कर्मोंमें हवनके समय स्वाहादेवी, श्राद्धकर्ममें स्वधादेवी तथा यज्ञादि कर्मोंमें दक्षिणादेवी प्रशस्त मानी गयी हैं।

सृष्टिके प्रारम्भमें देवतागण ब्रह्माजीके पास आये तथा अपने आहारके लिये प्रार्थना की। उन दिनों ब्राह्मणोंद्वारा अग्निमें जो हवि प्रदान की जाती थी, उसे देवता प्राप्त नहीं कर पाते थे। इस प्रकार वे आहारसे वंचित रह जाते थे। देवताओंकी यह प्रार्थना सुनकर ब्रह्माजीने श्रीकृष्णके आदेशानुसार मूलप्रकृति भगवतीकी आराधना की। जिसके फलस्वरूप स्वाहादेवी मूलप्रकृतिकी कलासे प्रकट हो गयीं। ब्रह्माजीने उनसे प्रार्थना की कि आप अग्निकी परम सुन्दर दाहिकाशक्ति हो जाइये; क्योंकि अग्निदेव आहुतियोंको भस्म करनेमें समर्थ नहीं हैं। स्वाहादेवीने इसे स्वीकार नहीं किया तथा वे श्रीकृष्णकी उपासनामें संलग्न हो गयीं। स्वाहादेवीकी तपस्यासे प्रसन्न होकर भगवान् श्रीकृष्णने कहा कि वराहकल्पमें तुम मेरी भार्या बनोगी, इस समय तुम दाहिकाशक्तिके रूपमें अग्निदेवकी मनोहर पत्नी बनो। इस प्रकार स्वाहादेवीका पाणिग्रहण अग्निसे हो गया, तभीसे अग्निमें हवन करनेपर मन्त्रके अन्तमें 'स्वाहा' शब्द जोड़कर मन्त्रोच्चारण करनेपर देवताओंको आहुतियाँ मिलने लगीं और वे सन्तुष्ट हो गये।

भगवती स्वधाका उपाख्यान—सृष्टिके आरम्भमें जगद्विधाता ब्रह्माने पितरोंके लिये श्राद्ध-तर्पण आदिका विधान किया, परंतु किसी व्यक्तिद्वारा जो श्राद्धीय पदार्थ अर्पण किया जाता था, उसे पितृगण प्राप्त नहीं कर पाते थे; अतः क्षुधासे व्याकुल सभी पितरोंने ब्रह्माजीकी सभामें जाकर उनको सारी बात बतायी। तब ब्रह्माजीने एक मनोहर मानसी कन्याका सृजन किया। मूल-प्रकृतिकी अंशरूपा स्वधा नामक ये देवी पितरोंकी पत्नीस्वरूपा और कमलके समान सुन्दर थीं। ब्रह्माजीने उस तृष्टिरूपिणी देवीको

सन्तुष्ट पितरोंको समर्पित कर दिया तथा द्विजोंको यह गोपनीय उपदेश भी प्रदान किया कि पितरोंको कव्यपदार्थ अर्पण करते समय स्वधायुक्त मन्त्रका उच्चारण करना चाहिये। तभीसे द्विजगण उसी क्रमसे पितरोंको कव्य प्रदान करने लगे।

देवताओंके लिये हव्य प्रदान करते समय स्वाहा और पितरोंको कव्य प्रदान करते समय स्वधाका उच्चारण श्रेष्ठ माना गया है।

भगवती दक्षिणाका उपाख्यान—अत्यन्त दुष्कर यज्ञ करनेपर भी जब देवताओंको यज्ञफल नहीं प्राप्त हुआ, तब वे उदास होकर ब्रह्माजीके पास गये। देवताओंकी प्रार्थना सुनकर ब्रह्माने भगवान् श्रीहरिका ध्यान किया। भगवान् नारायणने महालक्ष्मीके विग्रहसे मर्त्य-लक्ष्मीको प्रकट किया, जिसका नाम उन्होंने दक्षिणा रखकर ब्रह्माजीको सौंप दिया। ब्रह्माजीने भी यज्ञकार्योंकी सम्पन्नताके लिये दक्षिणाको यज्ञपुरुषको समर्पित कर दिया, जिससे दक्षिणासे युक्त यज्ञपुरुष सभी प्राणियोंको उनके कर्मोंका फल प्रदान करने लगे। कर्ताको चाहिये कि कर्म करके तुरन्त दक्षिणा दे दे, ऐसा करनेसे कर्ताको उसी क्षण फल प्राप्त हो जाता है। जो कर्म बिना दक्षिणाके सम्पन्न होता है, उसके फलका भोग राजा बलि करते हैं। दक्षिणायुक्त कर्ममें ही फल-प्रदानका सामर्थ्य होता है।

भगवती षष्ठीका उपाख्यान—भगवती षष्ठी मूल-प्रकृतिके छठे अंशसे आविर्भूत हैं, ये बालकोंकी अधिष्ठात्री देवी हैं। ये स्वामी कार्तिकेयकी भार्या हैं, और देवसेनाके नामसे विख्यात हैं। ये बालकोंको आयु प्रदान करती हैं और उनका भरण, पोषण तथा रक्षण भी करती हैं। ये सिद्धयोगिनी हैं, स्वायम्भुव मनुके पुत्र प्रियव्रतके मृतपुत्रको इन्होंने जीवनदान दिया तथा तभीसे सर्वत्र इनकी पूजा होने लगी। यह कथा नवमस्कन्धके ४६वें अध्यायमें विस्तारपूर्वक लिखी गयी है।

भगवती मंगलचण्डीका उपाख्यान—भगवती मंगलचण्डी मूलप्रकृति दुर्गाका ही एक रूप हैं, ये स्त्रियोंकी अभीष्ट देवता हैं। त्रिपुरासुरके वधके लिये भगवान् शिवने इन्हींका आराधन किया और इन भगवतीने

शक्तिस्वरूपा होकर उनकी सहायता की थी, जिससे भगवान् शिव उस दैत्यका वध कर सके। तदनन्तर स्वयं भगवान् शिवने उनका पूजन किया था।

भगवती मनसाका उपाख्यान—भगवती मनसा महर्षि कश्यपकी मानसी कन्या हैं। वे मनसे ध्यान करनेपर प्रकाशित होती हैं, इसीलिये मनसादेवी नामसे विख्यात हैं। राजा जनमेजयके यज्ञमें इन्होंने नागोंकी प्राणरक्षा की थी, अतः ये नागेश्वरी कही जाती हैं। इन्होंने भगवान् शिवसे सिद्धयोग प्राप्त किया था, अतः ये सिद्धयोगिनीके नामसे जानी जाती हैं। मुनीश्वर आस्तीककी माता होनेके कारण ये आस्तीकमाता नामसे जगत्में विख्यात हैं। ये महात्मा जरत्कारुकी प्रियपत्नी थीं, इसलिये ये जरत्कारुप्रिया कहलाती हैं। इनकी रोचक कथा विस्तारपूर्वक ४८वें अध्यायमें प्रस्तुत की गयी है।

आदि गौ सुरभिका आख्यान—देवी सुरभि गौओंकी अधिष्ठात्री देवी हैं। इनका प्राकट्य परब्रह्म परमात्मा भगवान् श्रीकृष्णकी दुग्धपानकी इच्छापूर्तिके लिये उनके ही वामभागसे हुआ था। इनका दूध जन्म-मृत्यु तथा बुढ़ापेको हरनेवाला, अमृतसे बढ़कर था। पूर्वकालमें भगवान् श्रीकृष्णने देवी सुरभिकी पूजा की थी, तभीसे तीनों लोकोंमें देवी सुरभिकी पूजाका प्रचार हो गया।

भगवती राधा तथा भगवती दुर्गाका उपाख्यान—जगत्की उत्पत्तिके समय मूलप्रकृतिस्वरूपिणी ज्ञानमयी भगवतीसे प्राण तथा बुद्धिकी अधिष्ठात्री देवियोंके रूपमें दो शक्तियाँ प्रकट हुईं। श्रीराधा भगवान् श्रीकृष्णके प्राणोंकी तथा श्रीदुर्गा उनकी बुद्धिकी अधिष्ठात्री देवी हैं। वे शक्तियाँ ही सम्पूर्ण जीवोंको सदा नियन्त्रित तथा प्रेरित करती हैं। विराट् आदि चराचरसहित सम्पूर्ण जगत् उन्हीं शक्तियोंके अधीन है। जबतक उन दोनों शक्तियोंकी कृपा नहीं होती, तबतक मोक्ष दुर्लभ रहता है। अतएव उन दोनोंकी प्रसन्नताके लिये उनकी निरन्तर उपासना करनी चाहिये।

भगवती श्रीराधा भगवान् श्रीकृष्णके प्राणोंकी अधिष्ठात्री देवी हैं। ब्रह्मा आदि समस्त देवता भी सदा

अन्य मनुओंद्वारा भगवतीकी आराधना—आद्य स्वायम्भुव मनुके बाद उनके पौत्र अर्थात् प्रियव्रतके पुत्र स्वारोचिष दूसरे मनु बने। उन्होंने यमुनातटपर सूखे पत्तोंका आहार करते हुए भगवतीकी बारह वर्षोंतक आराधना की। उनकी इस तपस्यासे प्रसन्न होकर भगवतीने उन्हें मन्वन्तराधिप बननेका वरदान दिया। इनके बाद उनके भाई उत्तम तीसरे मनु हुए। उन्होंने तीन वर्षतक भगवतीके वाग्भवमन्त्रका जपकर उनका अनुग्रह प्राप्त किया। उत्तमके बाद उनके भाई तामस चौथे मनु हुए। नर्मदाके दक्षिणी तटपर कामबीज मन्त्रका जप करते हुए उन्होंने भगवती परमेश्वरीकी कृपा प्राप्त की। तामसके बाद उनके अनुज रैवत पाँचवें मनु हुए। यमुनातटपर कामसंज्ञक बीजमन्त्रका जप करते हुए उन्होंने भगवतीकी आराधना की। रैवतके बाद चाक्षुष छठे मनु हुए। ब्रह्मर्षि पुलहकी सत्प्रेरणासे वे भगवतीकी आराधनामें प्रवृत्त हुए। उन्होंने बारह वर्षोंतक भगवतीके

शास्त्रीय तथा लौकिक भेदसे आचार दो प्रकारका



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!



KAPWING

सन्ध्योपासन और उसका माहात्म्य—विप्र वृक्ष है, सन्ध्याएँ ही उसकी जड़ हैं; वेद उसकी शाखाएँ हैं और सभी धर्म-कर्म उसके पत्ते हैं। अतः प्रयत्नके साथ मूल (जड़)-की रक्षा करनी चाहिये; क्योंकि मूलके कट